

शक्ति

सृष्टि की शुरुआत में केवल परमात्मा के संबंधित स्वच्छ चेतना और स्वच्छ शक्ति थे। स्वच्छ शक्ति निर्गुण स्थिति में रहता है। यह निरंतर बहते हुए, अनुभव को प्राप्त करते हुए अपने बारे में जान रहा है। इस सृष्टि में रहने वाले सब कुछ शक्ति के स्वरूप है। इसलिए यह ध्यान देना है कि, शक्ति हमेशा एक ही स्थिति में नहीं रहता। हर स्थिति अल्पकालिक है। उदाहरण: जैसे लैंडलाइन से मोबाइल विकसित हुआ, वैसे ही शक्ति भी एक ही स्थिति में ना रहते हुए निरंतर परिवर्तित होते हुए विकसित होता रहता है।

शक्ति निरंतर विकसित होते हुए परिवर्तित होना पसंद करता है। लेकिन जब हम अंदर शक्ति की विकास को रोकने की कोशिश करते हैं, तब वह सड़ जाता है। और वह शक्ति किसी भी तरह उस स्थिति से बाहर आने की कोशिश करती है। वह दुख या पीड़ा या दर्द या चिड़चिड़ाहट या बीमारी के माध्यम से बाहर आता है। हमारे अंदर रहने वाले पुराने शक्तिए इन रूपों के माध्यम से बाहर निकलता है। हम इस विषय के बारे में जाने बिना, इनसे युद्ध कर रहे हैं। इसलिए हमें शक्ति को निरंतर प्रवाहित और विकसित होने के लिए मदद करना चाहिए।

हम शक्ति को सृष्टि नहीं कर सकते ना ही नष्ट कर सकते। लेकिन हम शक्ति को एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। इसलिए हम किसी भी शक्ति को मार नहीं सकते। अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, गुस्सा, दर्द, भय, दुख, दया, स्वार्थ, निस्सवार्थ, स्वास्थ्य, बीमारी आदि शक्तियों को नहीं मार सकते, लेकिन यह ध्यान दीजिए कि इन्हें केवल परिवर्तित कर सकते हैं। इसलिए पेन किलर का उपयोग करके दर्द को मारने की कोशिश कर रहे हैं तो आप गलत कर रहे हैं, क्योंकि वह फिर से एक और नकारात्मक शक्ति के रूप में, वापस आपके पास ही आता है। अर्थात दुख, या कोई अन्य बीमारी के रूप में आपके पास आती है, या छोटे-छोटे दर्द सारे एक होकर बड़ा कैंसर के रूप में आपके पास आ सकता है।

यदि आप सकारात्मक संकल्प का चयन करके नकारात्मक से युद्ध करते हैं तो, अपनी संकल्प के लिए जो भी शक्ति आकर्षित कि है, वह सारे शक्ति को नकारात्मक विचार ग्रहण करके, वे मजबूत हो रहे हैं और हमें परिणाम हासिल करने से रोक रहे हैं। इसलिए अंत में नकारात्मक ही जीत रहा है। अर्थात आखिर बीमारी से या समस्या द्वारा सभी मर रहे हैं। महत्वपूर्ण से ध्यान देने वाली बात यह है कि, समस्या नकारात्मक में नहीं है, हम उसे बुरा शक्ति मानकर, विश्वास करते हैं कि यह हमें नुकसान पहुंचाने के लिए ही आ रहा है और आपको यह जानना है कि उनके साथ युद्ध करने में ही लोप है। इस तरह करने से हम कभी भी शांतिपूर्ण स्थिति को नहीं पहुंच सकते, क्योंकि हमारे अंदर हम हर काम में नापसंद के साथ युद्ध करने की वजह से डर और चिंता हमेशा रहता है। जीतने पर भी हमेशा यह डर बना रहता है क्योंकि हमें लगता है कि दुश्मन अंदर छिपा हुआ है और यह कभी भी आक्रमण कर सकता है।

इसलिए शांति से रहने के लिए शाश्वत समाधान यह है कि, समस्याएं या नकारात्मक आपको नाश करने के लिए सृष्टि नहीं हुए हैं, वे आपको मदद करने के लिए, आपमें नए सामर्थ्य को जगाते हुए आपके विकास में सहयोग देने के लिए ही हैं, इसे हम अपने अनुभव से जानना है। मानना है कि अपना जीवन को मैं स्वयं सृष्टि कर रहा हूं, अपने जीवन का पूरी जिम्मेदारी लेता हूं, शक्ति का स्वभाव को समझते हुए, उसे समर्थन देने वाले मास्टर को ही वह मदद करता है। जो व्यक्ति खुद को पीड़ित मानते हुए, अपने समस्या का कारण अन्य व्यक्ति कहता है, उन्हें शक्ति मदद नहीं करता। इसलिए यह जानना है कि, अगर आप बुरे शक्तियों को जैसे हैं वैसे ही स्वीकार कर सके तो, वह भी आपके संकल्प पूरी होने में मदद करेगा।

इस सृष्टि में हमेशा आपसे हीन और श्रेष्ठ लोग होते हैं। इसलिए आपसे हीन स्थिति में रहने वाले लोगों को क्षमा करना है, आदर करना है, उनके स्थिति को समझते हुए अपना प्यार देना है। यदि वे मौका दिए तो उनके विकास के लिए सहयोग देना है। इसी तरह से आपसे श्रेष्ठ स्थिति में रहने वाले लोगों की आराधना करना है, पूजा करना है, उन्हें आदर्श मानते हुए उनकी स्थिति को पहुंचने के लिए आपको प्रयास करना होगा। अर्थात् हीन लोगों के खिलाफ जीत कर, आधिपत्य हासिल करने की आदत को छोड़िए, क्योंकि वे आपसे उच्च स्थिति को पहुंचने की संभावना है। इसके अलावा श्रेष्ठ लोगों के खिलाफ जीतने की कोशिश करने की आदत को भी छोड़िए, क्योंकि श्रेष्ठ लोगों के हाथों में आप निश्चित रूप से हार जाएंगे। अर्थात् किसी के साथ या किसी भी शक्ति के साथ, उदाहरण के लिए आप क्रोध के साथ आराम से रहकर उसे आप प्यार प्रदान कीजिए। यदि आप उसे नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं, आप उसके साथ आराम से नहीं रह पा रहे हैं, तो समझे की वह आपसे श्रेष्ठ है और परमात्मा का प्रतिनिधि मानकर, उसके साथ आराम से रहने वाला स्थिति को पहुंचाने की अनुरोध करके इसके लिए खुद को समर्पित करें।

दूध में जहर डालने से सारा दूध जहरीला हो जाता है, या दूध में दही डालने से वह दही में परिवर्तित हो जाता है। इसी तरह से गुस्सा को बुरा मानकर उसे द्वेष प्रदान करने से वह क्रोध में परिवर्तित हो जाता है, यह आग में तेल डालने की तरह है। या क्रोध को दिव्य मानकर, उसे प्यार प्रदान करते हुए, उसे प्यार से देखने से वह प्यार में परिवर्तित हो जाता है। इसलिए सारे अच्छे-बुरे शक्तियों को प्यार से देखते हुए उन्हें दिव्य शक्तियों में परिवर्तित होने के लिए सहयोग देने से ही, आपको पता चलता है कि आप न्यूएनर्जी कॉन्सेप्ट का उपयोग कर रहे हैं, वरना आप इसे आचरण नहीं कर रहे हैं।

इसलिए क्रोध या कोई अन्य बुरे शक्तियां अधिक मात्रा में रहे तो असंतुष्ट और व्याकुलता में मत गिरो। यदि आपमें बुरे शक्तियां अधिक मात्रा में हैं तो यह दर्शाता है कि आपके पास अधिक शक्ति है। इसलिए बुरे शक्तियों की उपस्थिति के लिए खुश रहिए। लेकिन

उन्हें उचित तरह से उपयोग कीजिए, दुरुपयोग मत कीजिए। हम आग को घर जलाने के लिए या घर को दीपक से प्रकाशित करने के लिए भी उपयोग कर सकते हैं।

यहां हमें इस विषय पर ध्यान देना होगा कि, कोई भी शक्ति तटस्थ और मासूम होता है। इसे कैसे उपयोग करना है वह आपको नहीं बताता है, आपको ही स्वयं निर्णय लेना होगा। आहार पदार्थ सहित सारे शक्ति के रूपों में मदद करने की गुण और मारने की गुण दोनों होते हैं। दुश्मन मानेंगे तो वह मारता है, मित्र मानेंगे तो वह मदद करता है। इसलिए सारे अच्छे-बुरे लक्षणों को मुझे आनंद से जुड़े स्वास्थ्य स्थिति या बंधन स्थिति या कोई अन्य स्थिति की ओर ले जाने के लिए मार्गदर्शन कीजिए। आप मार्गदर्शन नहीं करेंगे तो, इसके पहले आपको उस लक्षण के प्रति जो भी भावना थी उसी की ओर आपको ले जाता है। यदि आप दवाइयां का उपयोग करने का फैसला लेते हैं, तो भी उन्हें प्यार से लीजिए। आनंद से जुड़े स्वास्थ्य की ओर ले जाने के लिए मार्गदर्शन करने से, वे भी आपको बुरे के प्रति प्यार पैदा करके आपके विकास में सहकार करेंगे। इसलिए अंदर के सारे विचार, गुण, लक्षण, रूप, स्वास्थ्य, बीमारी बाकी सभी को प्यार से देखते हुए, उन्हें शाश्वत आनंद परिणाम प्रदान करने का सुझाव दें।

मुझे एक बार मुंह के मसूड़ों में कुछ समस्या था। फिर उनसे मवाद और खून आना शुरू हुआ। तब आनंद से जुड़े स्वास्थ्य की ओर मुझे ले जाने के लिए उस बीमारी लक्षणों को मार्गदर्शन किया। सात दिन मैंने अपने शरीर से उत्पन्न हुए लक्षणों को प्यार से अनुभव किया। इस प्रक्रिया के बाद मेरे मसूड़ों फिर से स्वास्थ्य स्थिति को पहुंच गए। मैं अन्य कार्यों में व्यस्त ना होते हुए, उस समस्या से भाग जाने को ना सोचते हुए, उस समस्या के साथ ही रहते हुए, उसे मेरे प्रेम को प्रदान करने से ही मुझे परिणाम प्राप्त हुआ।

इसलिए यहां मैं कहना चाहता हूं कि, हमारे अंदर रहने वाले शक्तिओ को देखकर भयभीत होकर उनसे भागने या उन्हें मारने या घृणा करते हुए, परिवर्तित करने की कोशिश को रोककर, उन्हें जैसे हैं वैसे ही स्वीकार कीजिए। मैं 2004 से यही कर रहा हूं। मैंने कई जटिल परिस्थितियों का सामना किया, फिर भी मैं उनके लिए एक मास्टर की तरह रहते हुए या उन्हीं को समर्पण होकर उनके संबंधित शक्तिओ की विकास के लिए समर्थन करने से, मुझे शक्तियां मारने के बजाय उन कठिन परिस्थितियों ने ही मेरे आत्मा विश्वास को बढ़ाया।

इसलिए सकारात्मक संकल्प लेकर, उसके लिए ध्यान करके न्यूएनर्जी को आकर्षित करने के अलावा, हमारे पास पहले से रहने वाले पुराने शक्तिओ को भी परिवर्तन करने में सक्षम होंगे तो हम अद्भुत परिणामों को हासिल कर सकते हैं। इसलिए आप कोई भी शक्तिओ को, अर्थात कोई भी बीमारी शक्ति, कोई भी मानसिक शक्ति, या कोई अन्य शक्तिओ को परिवर्तन करने की विद्या को सीखने की सलाह दे रहा हूं। सिर्फ यह एक विद्या सीखना पर्याप्त है, आपका पूरा जीवन आपके हाथों में आने के लिए।

इस ज्ञान का आचरण करने वाले कई लोगों ने कई अद्भुत परिणामों को हासिल करने के बाद ही आपको इस अनुभव ज्ञान का प्रस्ताव कर रहा हूं। जो भी मैंने कहा है उन्हें अंध

विश्वास ना करते हुए साधना करके आप स्वयं अपने अनुभव से जानिए। कृषि-दृढ़ता के साथ साहस करने से कुछ भी संभव है, हर एक समस्या को आप स्वयं हल कर सकते हैं। छोटे-छोटे समस्याओं से आरंभ करके, उस समस्या से उत्पन्न होने वाले दुख को थोड़ा-थोड़ा सहने के लिए तैयार होकर, उन्हें अपने आप से कम करके, स्वयं पर विश्वास बढ़ाते हुए, जीवन को आनंद से बिताने की सुझाव दे रहा हूँ। उसके बाद आपकी मर्जी।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें <http://darmam.com/library.html>

पिघलजाओ

यदि आप अपने भाग: शरीर, मन और हृदय से परे जाकर आत्मा तक पहुंचना चाहते हैं, तो पहले यह पहचान लें कि, आप उनसे प्रभावित हैं और उनमें कैद होकर रह रहे हैं। उसके बाद अपना ध्यान अपने भागों से बदल के स्वयं पर लगाएँ, और फिर पिघलने का अभ्यास करें। जो कुछ भी होता है, इस प्रक्रिया में भाग लेने के बिना, आप अंदर जप करें कि, "केवल मैं पिघल रहा हूँ", और बर्फ के घन की तरह पिघल कर शुद्ध हो जाओ। इसके बाद अंदर फैल जाओ। बिना बात के, बिना सोचे समझे, बिना कुछ करते हुए, केवल इस भावना में रहना है कि मैं पूरे शरीर में मौजूद हूँ। फिर आप नींद की स्थिति में प्रवेश करेंगे, या अपने भागों से बाहर आकर खाली जगह में रहेंगे। इस स्थिति में यदि आप कुछ समय के लिए रह सकते हैं, तो विचार अपने आप ही पिघल जाते हैं और मौन अंदर रहेगा, और उसके बाद आत्मा प्रकट होगा। तब आप सुखदता, हल्कापन, ताजगी और आनंद का अनुभव करेंगे। अपनी आँखें तुरंत खोले बिना, इस आनंद को अपने सभी भागों में फैलाएँ। तब आपको सभी समस्याओं का समाधान मिल जाएगा। साथ ही आपके सभी भागों के बीच समन्वय होगा। इस ध्यान का अभ्यास कोई भी, कभी भी, कहीं भी, और बिना समय सीमा के, किया जा सकता है। इस ध्यान को रोजाना कम से कम 10 मिनट तक अभ्यास करें।

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.